**EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045**
**Volume 12, Issue 1, January-June, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com**

# उपमा कालिदासस्य

## डॉ. प्रियंका सिरोहिया

सहायक आचार्य संस्कृत, अग्रवाल कन्या महाविद्यालय गंगापुर सिटी, जिला सवाई माधोपुर, राजस्थान

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के कविकुलगुरू के रूप में प्रतिष्ठित है। ये नाटक महाकाव्य एवं ज्योतिष परम्परा में भी निष्णात माने गये है। इन्होने कुल 7 ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें तीन महाकाव्य, तीन नाटक एवं ऋतुसंहार नामक ग्रंथ की रचना की है। इसके अतिरिक्त ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित ज्योतिविदाभरणम् नाम का इनका प्रसिद्व ग्रंथ है। इन रचनाओं में जो वैशिष्टय है उसी के कारण वर्तमान में भी कालिदास की उतनी ही प्रतिष्ठा है जितनी पूर्व में थी। कालिदास महाकाव्यों के रचना में तो प्रवीण है ही बल्कि वे नाटकीयता में भी सर्वाधिक निपुण कवि है। उनका उपमा प्रयोग संस्कृत साहित्य में एक कीर्तिमान के रूप में स्थापित है।

इनके समीक्षकों ने कवि की उपमा को सर्वश्रेष्ठ कहा है। कुछ लोग उपमा से उपमा अलंकार का तो कुछ लोग सादृश्य मूलक अलंकार का अर्थ ग्रहण करते है। वस्तुतः कवि की उपमा का विन्यास जितना सुंदर होता है रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास आदि का उस से कम नही। अतः उपमा से सादृश्य मूलक अर्थालंकार अर्थ ग्रहण करना ही उचित है कवि के अनके अर्थान्तरन्यास सूक्ति के रूप में प्रसिद्व है। अर्थान्तरन्यास की इसी लोकप्रियता से प्रभावित होकर कहा गया है।

''उपमा कालिदासस्य नोत्कृष्टेति में मम।
अर्थान्तरन्यास विन्यासे कालिदास विशिस्यतें।।''

चाहे उपमा का प्रयोग हो या अर्थान्तरन्यास का अथवा किसी अन्य अलंकार का, सभी काव्य में विशेष चमत्कार उत्पन्न करते है। विशेष रूप से उपमा का प्रयोग तो अद्वितीय है। इनकी उपमा कहीं–कहीं यथार्थ है तो कहीं शास्त्रीय और कही अध्यात्मिक वे उपमाओं के कुशल शिल्पी है।

रधुवंश के प्रथम सर्ग के प्रथम पद में कवि ने शिव और पार्वती के सम्बन्धों की उपमा शब्द और अर्थ के सम्बन्ध से दी है–

''वागार्थालिव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।

संभव है 'शब्दार्थोसहितकाव्यम्' इस काव्य लक्षण की प्रेरणा आचार्यो को इसी उपमा से मिली हो । महाराजा दिलीप नंदिनी के साथ सायंकाल जब लौटते है तो स्वागतार्थ सुदक्षिणा आगे आती है तब सुदर्शना और दिलीप के मध्य नंदिनी ऐसे सुशोभित होती है जैसे दिन और रात्रि के बीच संध्या सुशोभित होती है।

'दिनक्षपामध्यगतेवसंध्या' (रधुवंश महाकाव्य 2.20) राजा दिलीप की दिन से, नंदिनी की लालिमा युक्त संध्या से और श्याम वर्ण, सुदक्षिणा की रात्रि से उपमा सटीक और मनोहर है।

रधुवंश के इंदुमती स्वयंवर में इंदुमती की दीपशिखा से दी गई है उपमा इतनी प्रसिद्व हो गई कि कवि का नाम ही 'दीपशिखा कालिदास पड गया। इदुंमती जिन–जिन राजाओं को छोड कर आगे बढती जाती थी उनका मुख उदास पडता जाता था जैसे राजमार्ग के वे भवन जो दीपक के आगे बढ जाने पर धुंधुले पडते जाते है।

''संचारिणी दीपशेखेव रात्रौ
यं यं व्यतीयाय पतिवंरा सा,
नरेन्द्र मार्गाह इव प्रपेदे
विवर्णभावं स स भूमिपालः।।''

कालिदास की सर्वोत्कृष्ट एवं सर्व रमणीय उपमा का यह उदाहरण देवी इंदुमती के स्वयंवर का वर्णन है। रधुवंश के इन्दुमती स्वयंवर में इन्दुमती की दीपशिखा से दी गई उपमा इतनी प्रसिद्व हो गयी कि कवि का नाम 'दीपशिखा कालिदास पड गया।

कालिदास को कही से भी पढिये, एक से बढकर एक उपमा मिलेगी। कालिदास की उपमा को व्यक्त करने वाले अनके श्लोक है जैसे–

क्व सूर्यप्रभवों वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।
मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिस्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्वाहुरिव वामनः।।

फिर कहते है कि मेरी हिम्मत तो देखिये कैसा असम्भव काम करने चला हूँ। इतने महिमाशाली वंश का वखान करने चला हूँ। जैसे कोई छोटी सी डोंगी लेकर महासागर को पार करने चले, जैसे कोई बौना उँचे लम्बे पेंड का फल तोडने की कोशिश करें। कुमारसम्भवम् में शिव के तपस्वी रूप का वर्णन करते हुऐ भी एक से बढकर एक उपमा देखने को मिलती है–

अवृष्टिसंम्भमिवाम्बुवाहमपामिवाधारमनुत्तरडंम्।
अतरराणां मरूतां निरोधानिन्नवतिनिष्कम्पमिव प्रदीपम्।।

शरीर के अन्दर चलने वाली प्राण–अपान आदि सभी वायु को रोक कर वे ऐसे अचल बैठे हुए हैं जैसे वर्षा न करने वाला बादल, जैसे बिना तरंगों वाला, और जैसे विना हबा के स्थान में निष्कम्प प्रदीप।

**निष्कर्षः–**

कालिदास की रचनाओं में इस प्रकार के बहुत से श्लोको का मौजूद होना, जिससे की यह प्रतीत होना कि उपमा अलंकार का ऐसा प्रयोग अन्य किसी भी कवि ने अपनी रचनाओं में नही किया है, अर्थात् कालिदास की रचनाओं में मौजूद उपमा अलंकार का रूप अद्वितीय है। अर्थात् कालिदास ने उपमा का ऐसा प्रयोग किया है जैसा अन्य कोई नहीं कर पाया है। इसी कारण से कालिदास को उपमा का प्रमुख और सर्वश्रेष्ठ कवि माना गया है। तथा उनको ''उपमा कालिदासस्य'' की उपाधि प्राप्त हुई। कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। तत्कालीन समाज के सच्चे रूप तथा सांस्कृतिक चेतना की झांकी हमें उनकी रचनाओं में मिलती है, कालिदास की गणना विश्व के महान साहित्कारों में की जाती है। शकुन्तला के अछूते सौन्दर्य को देखकर दुष्यंत ऐसे ही उपमानों की झडी लगा देते है।

अनाध्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै
रनाविद्वं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।

यह तो बिना सूंघा फूल है, अनछुआ पत्ता है, अनविद्या रत्न है, अनचखा शहद है। न जाने कितने संचित पुण्यों के फल जैसी इस शकुन्तला को पता नही विधाता ने किसके भाग्य में लिखा है।

प्रकृति से गृहीत उपमाओं में एक विलक्षण आनंद है। राक्षस के चंगुल से बधने पर बदहोश उर्वशी धीरे–धीरे होश में आ रही है। इसकी समता के लिए कालिदास चन्द्रमा के उदय होने पर अधंकार से छोडी जाती हुई रजनी, रात्रिकाल में धूमराशि से विरहित होने वाली अग्नि का ज्वाला, बरसात में तट के गिरने के कारण कलुषित होकर धीरे–धीरे प्रसन्न–सलिला होने वाली गंगा को साथ देकर पाठकों के सामने तीन सुन्दर दृश्य को एक साथ उपस्थित कर देते है। ये तीनों उपमायें औचित्यमण्डित होने से नितान्त रसाभित्यन्जक है। (विक्रमोर्वशीय 1.9)

आविर्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रि
नैंशस्याचिर्हुितभुज इव छिन्नभूयिष्ठधूमा
मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यते मुक्तकल्पा
गंगा रोधः पतनकलुषा गृहतीव प्रसादम्।।

अतः उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है कि महाकवि कालिदास को उपमा प्रयोग कोटि तथा हदयावर्जक है।